गुणात्मक शिक्षा एक द्वंद्व

हृदय कांत दीवान

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा : सामान्य समझ

सामान्य तौर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ ऐसी शिक्षा से लगाया जाता है जो रटने से दूर ले जाती हो। यह कहा जाता है कि अच्छी शिक्षा यानी वह जानकारी आधारित न हो बल्कि अवधारणाओं की समझ पर केंद्रित हो। हालांकि इसमें क्षमताओं का विकास करना भी जोड़ा जाता है, किन्तु इन क्षमताओं में क्या शामिल है और किस प्रकार से शामिल है, इसमें कुछ भ्रम दिखते हैं। अक्सर यह पता नहीं चल पाता कि इन क्षमताओं के बारे में सोचने वाले व्यवहार में इनका जुड़ाव, अवधारणा विकास से करते हैं अथवा जानकारी से। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक और प्रचलित प्रमुख शब्दावली है– शिक्षक व पुस्तक केंद्रित के स्थान पर 'बाल केंद्रित शिक्षा'। इस बाल केंद्रित शब्द के तात्पर्य के भी कई स्वरूप दिखते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की इस व्याख्या में और इस जैसी कई और शब्दावलियों में आज की शिक्षा में जो नहीं दिखाई देता, उस कमी को रेखांकित करते हुए उसके विकल्प को गढ़ा जाता है।

ऐसे में अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बुनियादी आधार पर विचार न होकर कुछ सतही मसलों पर ध्यान केंद्रित हो जाता है। एक तरह से यह समझा जाता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मतलब आज की शिक्षा का विकल्प याने जो आज नहीं हो रहा है, उसे संभव बनाना। इस धारणा में 'नवाचार' शब्द भी बहुत प्रमुख है। अच्छी व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की एक परिभाषा मात्र 'नवाचारी शिक्षा' भी है, याने ऐसा कुछ होना आवश्यक है जिसमें पहले से कुछ भिन्न हो। शिक्षा से संबंधित हर योजना और हर बजट में नवाचार के लिए जगह रखी जाती है।

एक और व्याख्या 'गतिविधि आधारित शिक्षण' की है। यह अलग है कि अंग्रेजी में 'लर्निंग' शब्द है जो हिंदी में शिक्षण बन जाता है। इस तरह की व्याख्या में इन गतिविधियों के स्वरूप व गुण की समझ पर स्पष्टता की आवश्यकता तो होती ही है जिसमें सबसे पहले 'सीखने' व 'शिक्षण' के बीच के अंतर को समझना उपयोगी होगा। वैसे इस स्पष्टता को व्यक्त करने के लिए कई तरह के एक शब्दी रूपक उपयोग में लाए जाते हैं। जैसे गतिविधि जिसमें सहभागिता हो, हर स्तर का बच्चा शामिल हो सके, रोचकता हो, मजा हो आदि। इस व्याख्या में यह भी जुड़ा है कि सीखने में सभी कक्षाओं व प्रत्येक कक्षा में बैठने वाले सभी स्तर के बच्चे शामिल हो पाएं। गतिविधि आधारित शिक्षण की शब्दावली अलग–अलग नामों से और अलग–अलग प्रकार से काफी प्रचलित हुई है। देश भर में असंख्य प्रशिक्षण, गतिविधि आधारित शिक्षण को प्रसारित करने के लिए आयोजित किए जाते रहे हैं। गतिविधि आधारित शिक्षण की विभिन्न व्याख्याओं में गहरे मतभेद भी हैं। किसे गतिविधि मानेंगे और उसके गुण क्या होंगे? इसी तरह यदि गतिविधि के 4–5 प्रमुख गुण भी मान लें तो भी इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण कौन से हैं? यदि सीखने–सिखाने के लिए इन गुणों वाली गतिविधि का निर्माण न किया जा सके तो क्या वह विषय ही न पढ़ाएं? कौन–सी कक्षा तक गतिविधि होगी? आदि।

एक और शब्दावली में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को 'रचनावादी' अथवा 'निर्माणवादी' स्वरूप देना समझा जाता है। यह माना जाता है कि एन.सी.एफ.–2005 इसी निर्माणवादी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की वकालत कर रहा है। इस दृष्टिकोण में यह अर्थ सामान्य तौर पर निकलता है कि हर बच्चा अपने ज्ञान का स्वयं निर्माण करता है, हर बच्चा विलक्षण है और इसलिए उसे न सिर्फ व्यक्तिगत ध्यान की जरूरत है वरन् उसे अपने तरीके से सीखने का मौका मिलना चाहिए, इसे प्रदान करना स्कूल व कक्षा की जिम्मेदारी है। निर्माणवाद की सतही समझ, चूंकि यह अर्थ देती है, इसलिए कोई भी बच्चा गलत नहीं समझा जा सकता। मतलब जो भी बच्चे ने उत्तर दिया, वह उसके दृष्टिकोण से सही है। वैसे रचनावादी/निर्माणवादी शिक्षा की वकालत करने वालों में भी कई धाराएं हैं। एक धारा तो स्कूल में पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्यपुस्तक व किसी भी निर्धारित प्रक्रिया अथवा ढांचे को ही नकारती है। इसके अनुसार बच्चों की ज्ञान निर्माण की इच्छा, गति और अनुभव के आधार पर बढ़ना ही ठीक माना जाता है। यह धारा कहीं–कहीं जाकर बाल केंद्रित शिक्षा से भी जा मिलती है।

शिक्षा की गुणवत्ता की कसौटी बनने वाले और बनाए जाने वाले इन सब शब्दों में आपस में सामंजस्य है भी और नहीं भी। अक्सर हम लोग चर्चाओं में इनको एक–दूसरे के पर्याय के रूप में इस्तेमाल करते ही हैं। यह इसलिए भी है क्योंकि ये शब्द अलग–अलग तरह से व्याख्यायित किए जा सकते हैं। इन व्याख्याओं में बहुत से पहलू छिप जाते हैं और यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि किस की व्याख्या से क्या–क्या शामिल हो रहा है। यह भी समझ नहीं आता कि बोलनेवाले ने इन पहलुओं के बार में एकाग्रता से कुछ सोचा भी है या सतही रूप

से ही ये इस्तेमाल हो रहे हैं। एक बात, इन सब में एक जैसी है, वह है कि इनके केंद्र में कुल मिलाकर, कक्षा की प्रक्रिया व कक्षा की सामग्री ही है। हालांकि इन सब शब्दों का अर्थ हमेशा एक सा नहीं रहा है और पिछले चार दशकों में अलग–अलग मिश्रण में इन शब्दों का दबदबा शिक्षा के विमर्श को संचालित करता रहा है।

इनमें से एक–आधी व्याख्या को ही शायद शिक्षा की धारणा से जोड़ा जा सकता है। हालांकि इसे कुरेदने पर इसमें भी समीक्षा के अर्थ व उसके लक्ष्यों में हम बहुत दूर तक नहीं जा सकते। शिक्षा की गुणवत्ता की बात करने से पहले, शिक्षा के अर्थ, स्वरूप व उसके महत्त्व को पहचानने व उसके बारे में सोचने की आवश्यकता है। हमें यह तय करना है कि क्या इसके लिए हमारे पास सोच का एक एकीकृत ढांचा है? ऐसे ढांचे की अनुपस्थिति में, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सीमित होकर टेस्ट अथवा सामग्री की उठा–पटक, खेल, मजा आदि–आदि व परीक्षा के अंकों के मायाजाल में खोकर रह जाएगी।

इस तरह यदि शिक्षा की अवधारणा उसके उद्देश्यों के स्तर पर ही सीमित हो जाती है तो उसका प्रभाव सभी प्रयासों पर पड़ता है। हम इस प्रभाव को, इस तरह के व्यवहार को चर्चाओं में तो अनुभव करते ही हैं, किंतु नीति के स्तर पर भी दिखता है कि शिक्षा की अवधारणा की समझ व उसका अर्थ बदलता रहा है। शिक्षा व्यवस्था के अधिकारी व स्कूली शिक्षक ही नहीं वरन् शिक्षकों को तैयार करने वाले भी समग्र व एकाग्र सोच की बजाए शिक्षा व उसकी गुणवत्ता को सतही और सीमित ढंग से ही देखते हैं। इस चर्चा को व्यापक और गहरा करने की राह में कई प्रयास हुए हैं।

इसी तरह का एक प्रयास बीसवीं सदी के आखिरी दशक में 'न्यूनतम अधिगम स्तर' आधारित था। इस प्रयास का लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंचना था। इसकी कल्पना में शिक्षा, पाठ्यपुस्तक, प्रशिक्षण, आकलन आदि को समग्र रूप से न्यूनतम अधिगम के अनुरूप बनाना था। इन स्तरों को हर स्कूल में हासिल करवा पाना ही शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाना माना गया था। इसमें यह भी कहा गया था कि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य जानकारी देना नहीं बल्कि कौशल विकास करना है। इसके चलते पूरे पांच साल की प्राथमिक शिक्षा को कौशलों की छोटी–छोटी श्रृंखलाओं में बांध कर, यह सुनिश्चित करने के प्रयास की वकालत की गई थी, जिसमें कि सभी बच्चे (कम से कम 80 प्रतिशत) इन कौशलों को तय समय में और तय क्रम से सीख पाएं। जैसा कि पाठ्यक्रम विभाजन, पाठ्यपुस्तक निर्माण, शिक्षक– प्रशिक्षण, आकलन आदि सभी इसी समझ के आधार पर बनाए जाने थे और बहुत से राज्यों में जोर–शोर से यह प्रक्रिया हुई। इस पूरे प्रयास को बाद में व्यवहारवादी कहा गया और इसकी तीखी आलोचना हुई। इसके चलते, हालांकि नीति के स्तर पर व प्रचलित विमर्श में इसे अच्छा नही माना जाता किंतु यह गहरे में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ शिक्षा में काम करने वाले लोगों के मन में चिपक–सा गया है। क्षमता व कौशल के अर्थ, गतिविधि आधारित शिक्षण के अर्थ व आकलन आदि की शब्दावली इस प्रयास के बाद किंतु काफी भिन्न हो गई। शिक्षा के उद्देश्य व समाज के साथ उसके रिश्ते पर बड़ी चोट लगी। इसके बाद कई प्रयासों में न्यूनतम अधिगम स्तर के अलग–अलग पहलुओं को चुनौती दी गई। इस सब का एक समग्र रूप एनसीएफ 2005 में प्रस्तुत हुआ। 15 वर्षों के अंतराल में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समझ में यह बहुत बड़ा बदलाव था।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के बुनियादी सिद्धांतों में शिक्षा के उद्देश्यों को शामिल किया गया है और इस बात को भी शामिल किया गया

है कि शिक्षा में किस प्रकार का ज्ञान और उसको हासिल करने की कैसी प्रक्रिया इस्तेमाल की जानी चाहिए। शिक्षा के उद्देश्य इस बात से जुड़े हैं कि वे किस–किस तरह के बच्चों के लिए हैं और उसमें किस तरह के समाज की कल्पना निहित है। यह इस बात पर भी निर्भर है कि हम इंसान को व उसके अस्तित्व को किस ढंग से देखते हैं। यह आखरी पहलू, इस बात को भी शामिल करेगा कि ऐतिहासिक दृष्टि व ब्रह्मांड के संदर्भ में हम इंसान को कैसे देखते हैं। इन्हीं में ही वे मूल तत्व निकलेंगे जो हमारे उद्देश्यों को निर्धारित करेंगे। ज्ञान व सीखने के संदर्भ में यह तय है कि हर विचार/मत/बात आदि को ज्ञान नहीं माना जा सकता। तो फिर किस तरह तय करें कि ज्ञान किसे मानेंगे। साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि सीखने का अर्थ क्या है और हम कब यह मानेंगे कि कोई बच्चा सीख गया है। कैसे सिखाना है, इसके बाद ही सोचा जा सकता है। एक और कड़ी जो सोचने के लिए जरूरी है, वह यह कि इंसान सीखता कैसे है और हमारी सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया के क्या–क्या आयाम हैं। अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अभी के स्वरूप में इन सभी बातों को पर्याप्त स्थान नहीं मिलता।

शिक्षा के उद्देश्य के पहलू, ज्ञान की कसौटी के पहलू, इंसानी बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के पहलू व शिक्षा के सामाजिक संदर्भ व बच्चों में विविधता के पहलुओं पर एनसीएफ–2005 बहुत जोर देता है। यह कहा जा सकता है कि एनसीएफ कई मसलों पर इतनी स्पष्टता नहीं देता जितनी कि आवश्यक है। फिर भी वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का एक बुनियादी ढांचा और उसके लिए आवश्यक परिस्थितियों का निरूपण तो करता ही है। इस निरूपण में खास बात यह है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के दायित्व को सिर्फ कक्षा व शिक्षक के ऊपर नहीं उड़ेलता बल्कि उसको ज्यादा व्यापक अवधारणा के रूप में चिह्नित करता है। इसी कारण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की धारणा, पाठ्यचर्या की तरह ही एक निरपेक्ष शब्द न रह कर द्वन्द्व के मुद्दे के रूप में सामने आती है।

क्या सही है, क्या नहीं

इस बात को समझने के लिए शिक्षा के उद्देश्य वाले मसले व सभी के लिए शिक्षा के मसले को थोड़ा उकेरेंगे तो बात और स्पष्ट हो जाएगी। अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करते समय, उसके लिए आवश्यक संसाधन, उसमें शामिल प्रक्रियाओं व सीखने में सभी को शामिल करके, हम उस पर नहीं सोचते। सभी के लिए शिक्षा के संदर्भ में यह बात महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि गुणवत्ता का अहसास कैसे होगा। क्या माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण होने का आकलन, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल छात्र–छात्राओं की संख्या से लगाया जाएगा? अथवा परीक्षा के अंकों के स्थान पर कुछ और पहलुओं को देखकर इसका निर्णय होगा? जानकारी से दूर जाने के लक्ष्य को सर्वोपरी मान कर और स्वतंत्र चिंतन को महत्त्वपूर्ण समझ कर सोचें तो बच्चों की जिज्ञासा व प्रश्नों को प्रोत्साहित करना आवश्यक हो जाता है। तो क्या यह मानें कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ यह है कि सभी बच्चे स्वतंत्र रूप से सोचने व प्रश्न पूछने लग जाएं? वे हर तरह के प्रश्न पूछ सकेंगे या फिर प्रश्नों का कुछ समय व दायरा तय करना अनिवार्य हो जाएगा? क्या पूरी तरह स्वतंत्र हो कर हर बात पर, हर तरह से सवाल को प्रोत्साहन देने से कुछ अड़चन भी आ सकती है। तो फिर कैसे इन बातों में संतुलन करें? क्या सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में यह निहित है कि सभी को एक जैसे मौके मुहैया हों? क्या एक जैसे ये मौके सबको मुहैया करवाए जा सकते हैं?

शिक्षा के उद्देश्यों के संदर्भ में जब हम सभी के

लिए शिक्षा की बात करते हैं तो एक सामान्य–सी बात आसानी से कही और मान ली जाती है, वह यह है कि शिक्षा का उद्देश्य अच्छा नागरिक बनाना है। इस अच्छे नागरिक में क्या छिपा है, इसकी व्याख्या पर सहमति इतनी सरल नहीं है। उदाहरण के लिए, क्या अच्छे नागरिक का अर्थ यह है कि जो हर बात पर सवाल पूछे यानि हर नियम को जाने–परखे, उसे चुनौती दे, उसके उपयोग व इस्तेमाल के ढंग पर सवाल पूछे और उसे बदलने की कोशिश करे? याने क्या अच्छे नागरिक का अर्थ यह है कि ऐसा व्यक्ति जो समाज में लगातार बदलाव के प्रयास के बारे में सोचता रहे और उसे अंजाम देने में मदद करता रहे? या फिर अच्छा नागरिक वह है, जो समाज के नियमों को माने व उनके अनुसार कार्य करे? वह समाज में माने जाने वाले नियमों व रीतियों की इज्जत करे व उन्हें स्थापित करने में मदद करे। हम यह कह सकते हैं कि यह व्याख्या समस्या मूलक व गलत है। इनमें से कोई भी बात पूरी तरह से ठीक नहीं है। असल में ये न तो पूरी तरह से ठीक है और न सही और न ही गलत। पर जब हम इन दोनों का मिश्रण बनाने बैठेंगे तो किसे बदलना है और कितना और कैसे या वैसे ही रखना है, आदि सवालों पर एकमत होना असंभव है। यह तो सिर्फ एक उद्देश्य के संदर्भ में बात हुई इनमें शिक्षा के अन्य उद्देश्यों को शामिल करें तो निष्कर्ष तक आना और कितना जटिल होगा हम सोच सकते हैं। हर उद्देश्य से मामला और उलझ जाएगा। किंतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बारे में बात करते समय, बगैर इन मसलों पर बातचीत किए और बगैर इन पर संघर्ष किए एक साझा समझ नहीं बनेगी। इस साझी समझ के बगैर हम आगे नहीं बढ़ सकते।

नहीं तो वैसा ही होगा जैसा शिक्षक व स्कूल महसूस कर रहे हैं। कुछ नवाचार करने के प्रयास में हर पल कुछ नया शुरु करने की बात होती है। शिक्षा प्रशासन के केंद्रीकृत ढांचे के चलते उच्च अधिकारियों का नजरिया व विचार ही सर्वोपरी होते हैं। उन्हें भी यह आवश्यक लगता है कि उनके कार्यकाल में कुछ न कुछ नया तो हो। इसके चलते लगातार कुछ न कुछ बदलने की आवश्यकता रहती है। शिक्षा व उसकी गुणवत्ता की साझी समझ हो तो कोई परेशानी नहीं या कम परेशानी होगी। हर नया कदम और हर नवाचार के साझी समझ के दायरे में होने से पहले प्रयास के विपरीत अथवा बिल्कुल ही अलग दिशा में नहीं होगा। शिक्षा एक पीढ़ी दर पीढ़ी की प्रक्रिया है। इसमें परिवर्तन शनै–शनै ही हो सकता है। नया करने की होड़ व नवाचार पर जोर सिर्फ यह देखना चाहता है कि नया क्या हुआ। पहले बहुत अच्छा हो रहा था तो भी उसे बदल कर कुछ तो नया करो। नएपन का यह जोर शायद लोगों के सृजन व भागीदारी को प्रेरित करने के लिए भी है, फिर भी नवाचार व नएपन की दौड़ इस केंद्रीकृत व्यवस्था में शिक्षक के स्वतः प्रयास व समझ के विकास में बड़ी बाधा है। परिवर्तन, साझा समझ, शिक्षा के उद्देश्य व शिक्षक के वजूद का एक और पहलू भी है। हर समाज यह चाहता है कि उसमें सम्मिलित लोगों का भी और स्वयं समाज का भी विकास हो। लेकिन यह भी जरूरी होता है कि समाज के नियमों व उसके रीति–रिवाजों को बरकरार रख कर उन्हें आगे बढ़ाया जाए क्योंकि वही उसकी पहचान है। इनमें से किस–किस प्रथा को, कार्य के ढंग को, रीति–रिवाज माना जाएगा और फिर कौन से रीति–रिवाज को बरकरार रख कर, उसे आगे बढ़ाना है, किन को बदलना है, इनमें कैसा बदलाव करना है, आदि प्रश्न गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आधार तय करने की एक बुनियादी कड़ी है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संदर्भ में शिक्षा के उद्देश्यों का मसला बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। अगर इस मसले पर गहराई से विचार नहीं किया जाए, तो फिर तमाम दस्तावेजों और वक्तव्यों के बावजूद,

उद्देश्य कुछ खास व्यवहारों तक सीमित हो जाते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की चिंता करते–करते हम शिक्षा की सामान्य व मान्य समझ के बहुत से पहलुओं का ध्यान नहीं रखते। इनमें सबसे प्रमुख शिक्षा व उसकी उत्तमता के आधार हैं। शिक्षा में बढ़ते केंद्रीकरण के चलते, शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने और उसके उपयोगी होने का परीक्षण करवाने व उसके आंकड़ों पर निष्कर्ष निकालने से, शालाओं, बच्चों व शिक्षकों की विविधता नजरअंदाज हो जाती है। आज के संदर्भ में, यह महत्त्वपूर्ण माना जाने लगा है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की जांच उपकरणों द्वारा ही की जा सकती है। इसमें महत्त्वपूर्ण यह ही माना जाता है कि बच्चा परीक्षा में सफल हो। शर्त यह भी होती है कि परीक्षा स्कूल के शिक्षक के अलावा कोई दूसरा ले और परीक्षा ऐसे मापदंडों के आधार पर हो जो व्यापक स्तर पर सही मानी जाए। हालांकि, साथ–साथ यह भी कहा जाता है कि इस तरह की जांच का उद्देश्य बच्चों को ज्यादा दबाव में डालना नहीं है। बाहर की परीक्षा का दबाव स्कूल व शिक्षक पर और अंततः बच्चों पर पड़ता ही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की इस व्याख्या में, सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह हो जाता है कि हम यह जांचें कि, जो जांचने वाला मानता है, बच्चों को सिखाना चाहिए और जिस ढंग से वह सीखना चाहे, वे ऐसा कर पाए हैं या नहीं। इसमें यह भी माना जाएगा कि किसी भी संदर्भ में बच्चों की उम्र के हिसाब से सीखने की सामग्री, स्तर व जांच उपकरण परिभाषित किए जा सकते हैं। यह भी कहीं न कहीं माना जाता है कि बहुत कुछ जो स्कूल में सीखना है वह व्यवहार में तत्काल स्पष्ट रूप से झलकना चाहिए। विभिन्न स्तरों पर, इस तरह के परीक्षणों का दबाव बढ़ता जा रहा है। क्योंकि ढांचे के काम करने के ढंग पर शक की लकीर गहरा रही है। दरअसल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की इस संकुचित समझ, में शिक्षा के स्तर का प्रमुख जिम्मेदार शिक्षक व बच्चा बन जाता है और शेष हर स्तर के शैक्षिक अधिकारी का काम मात्र शिक्षक और बच्चों के काम को जांचना और उसमें गलती निकालना रह जाता है। इसमें यह भी शामिल हो जाता है कि शिक्षक व स्कूल के सभी कार्यकर्ताओं को ठेल कर ही पढ़ाने का कार्य करवा सकते हैं।

हृदय कांत दीवान : विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर में शैक्षिक सलाहकार हैं।